TDC-2nd (H)

समाजीकरण की प्रक्रिया (Process of socialization)

समाजीकरण एक लम्बी प्रक्रिया है। यह बच्चों के जन्म से प्रारम्भ होती है तथा जीवन के अन्त तक चलती रहती है। यह जन्मजात नहीं है, बल्कि अर्जित प्रक्रिया है। व्यक्ति सामाजिक मूल्यों व प्रतिमानों को अनेक प्रक्रियाओं के माध्यम से सीखते हैं। वे अनेक प्रक्रियाएँ जो समाजीकरण में सहायक होती हैं, समाजीकरण की प्रक्रिया कही जाती है। समाजीकरण की मूल प्रक्रियाओं का विवेचन निम्नलिखित है :—

(1) पालन - पोषण की प्रणाली :—

समाजीकरण की प्रक्रिया में लालन - पालन की प्रणाली का विशेष महत्व है। यदि बच्चों को समयानुकूल भोजन, शौच - क्रिया, स्नान, सोना आदि कराया जाता है तो इसका अनुकूल प्रभाव पड़ता है। इसमें एक तरफ बच्चों में समय निष्ठा का विकास होता है और दूसरी तरफ उसमें सन्तोष का भाव उत्पन्न होता है। इसका साकारात्मक प्रभाव बच्चों पर पड़ता है।

(2) सहानुभूति :—

समाजीकरण की प्रक्रिया में सहयोग की भूमिका के साथ - साथ सहानुभूति की भी भूमिका का विशेष महत्व है। जिस परिवार या समूह में बच्चों के साथ सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार किया जाता है, वहाँ बच्चों पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है। इससे बच्चों में अन्य व्यक्तियों के प्रति सहानुभूति का विकास होता है। फिर समाज में मिलनसार व्यक्ति के रूप में जीने की कला विकसित करता है। यह व्यक्तित्व का

खास गुण बन जाता है।

(3) सहयोग :—

समाजीकरण की प्रक्रिया में सहयोग की भूमिका विशेष महत्वपूर्ण है। बच्चा जन्म से सामाजिक नहीं होता। वह सिर्फ जैविकीय प्राणी होता है। माता-पिता, परिवार, पड़ोस व अन्य समूहों के सहयोग से बच्चा जैविकीय प्राणी से सामाजिक प्राणी बनता है। व्यक्तित्व के निर्माण में सहयोग अद्वितीय है। सहयोग से अनुकूलन का विकास होता है।

(4) संघर्ष :—

समाजीकरण की प्रक्रिया एवं संघर्ष का गहरा संबंध है। संघर्ष व्यक्ति को जागरूक एवं चेतनशील बनाता है। जागरूकता और चेतनता की स्थिति में व्यक्ति आगे की ओर बढ़ता है। संघर्षशील व्यक्ति में लगातार निखार आता है। आज का जीवन सुख-भोग पर टिका नहीं है, संघर्ष पर टिका है।

(5) प्रतिस्पर्धा :—

आज के गतिशील एवं आधुनिक समाज में प्रतिस्पर्धा एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। बच्चों में जितनी अधिक प्रतिस्पर्धा होगी, वे उतने अधिक आगे बढ़ेंगे। इससे एक तरफ बच्चों में अत्यधिक परिश्रम करने की भावना बढ़ती है, दूसरी तरफ कार्यक्षमता का विकास होता है।

(6) अनुकरण :—

समाजीकरण की प्रक्रिया और अनुकरण में गहरा संबंध है। प्राय:

बच्चे अपने से बड़ों का अनुकरण करते हैं। यह अनुकरण परिवार, पड़ोस, खेल-समूह, स्कूल कॉलेज आदि से संबंधित है। सामाजिक नियमों, रीति-रिवाजों मान्यताओं जीवन-शैली आदि का सीखना अनुकरण पर निर्भर होता है। यदि अनुकरण की प्रक्रिया अच्छाई की ओर उन्मुख हो, तो व्यक्तित्व का विकास सही दिशा में होता है अन्यथा बुरा भी पड़ता है।

③ सुझाव :—

सुझाव के माध्यम से समाजीकरण की प्रक्रिया होती है। बच्चा सामाजिक रीति-रिवाजों रहन-सहन, खान-पान पहनावा-ओढ़ावा, अभिवादन के ढंग आदि को सुझाव के द्वारा ही सीखता है और उसके अनुरूप व्यवहार करता है। बच्चा को परिवार में माता-पिता, स्कूल मे शिक्षक इत्यादि ही इनके सुझावकर्ता होता है। बच्चों के व्यक्तित्व विकास में सही समय पर सही सुझाव आवश्यक है।

④ भाषा :—

समाजीकरण की प्रक्रिया में भाषा महत्वपूर्ण है। भाषा व्यक्ति के विकास की अभिव्यक्ति का माध्यम है। बच्चा आरम्भ से बोल नहीं पाता, पारिवारिक सम्पर्क में शब्दों के अर्थ समझने का प्रयत्न करता है। भाषा के माध्यम से दूसरों के विचारों को ग्रहण करता है।

⑤ प्रचार :—

वर्तमान समय में समाजीकरण की प्रक्रिया प्रचार से संबंधित है। आज अखबार, पत्र-पत्रिकाएँ, टेलीविजन, फिल्म और रेडियो आदि प्रचार के साधन हैं। इन साधनों के माध्यम से व्यक्ति समाज की संस्कृति, आदर्श, मान्यताओं आदि को सीखता है।